बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतम पुरा, दिल्ली।

साप्ताहिक पाठ योजना

कक्षा – छठी

विषय- हिंदी

सप्ताह- 9/11/20 से 13/11/20 तक कालांश – 02

उपविषय – टिकट अलबम (कहानी)

अधिगम प्रतिफल -

1) छात्रों में सही व गलत को पहचानने के गुणों का विकास हो सकेगा।

2) छात्रों में निर्णय लेने की क्षमता बढ़ सकेगी।

3) छात्र अभ्यास कार्य स्वयं कर सकेंगे।

निर्देशात्मक सहायक सामग्री –

नीचे दिए गए लिंक के माध्यम से छात्र पाठ को समझेंगे।

https://youtu.be/Xj4MaUwqnQI

https://www.youtube.com/watch?v=MsrUoFGG_3M

https://www.youtube.com/watch?v=dgPegqBwEuo

पाठ परिवर्धन –

कालांश -1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखिए।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न 1. 'टिकट-अलबम' पाठ के लेखक कौन हैं?

प्रश्न 2. नागराजन के मामा कहाँ रहते थे?

प्रश्न 3. नागराजन का अलबम किसने चुराया?

प्रश्न 4 नागराजन को अलबम किसने भिजवाया था?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न 1. अलबम चुराते समय राजप्पा किस मानसिक स्थिति से गुज़र रहा था?

प्रश्न 2. राजप्पा को अपने अलबम से चिढ़ क्यों हो गई थी?

प्रश्न 3. नागराजन ने अलबम के मुख्य पृष्ठ. पर क्या लिखा और क्यों ?

कालांश -2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी कॉपी में लिखिए।

प्रश्न 1. **लड़के राजप्पा की अलबम को क्या कहने लगे थे ?**

प्रश्न 2. **राजप्पा किस दिन टिकट की खोज में लगा रहता था ?**

प्रश्न 3. **राजप्पा अलबम के जलाए जाने की बात नागराजन को क्यों नहीं कह पाया ?**

प्रश्न 4. **राजप्पा ने नागराजन का टिकट-अलबम अँगीठी में क्यों डाल दिया?**

क्रियाकलाप –

टिकटों की तरह ही बच्चे और बड़े दूसरी चीज़ें भी जमा करते हैं। सिक्के उनमें से एक हैं। तुम कुछ अन्य चीज़ों के बारे में सोचो जिन्हें जमा किया जा सकता है। उनके नाम लिखो।

पूरक पुस्तक - पिटारा

नोट- नीचे दिए गए 'पिटारा' के पाठ -४ 'गुस्से की दवा' को पढ़िए तथा इससे संबंधित अभ्यास कार्य करें।

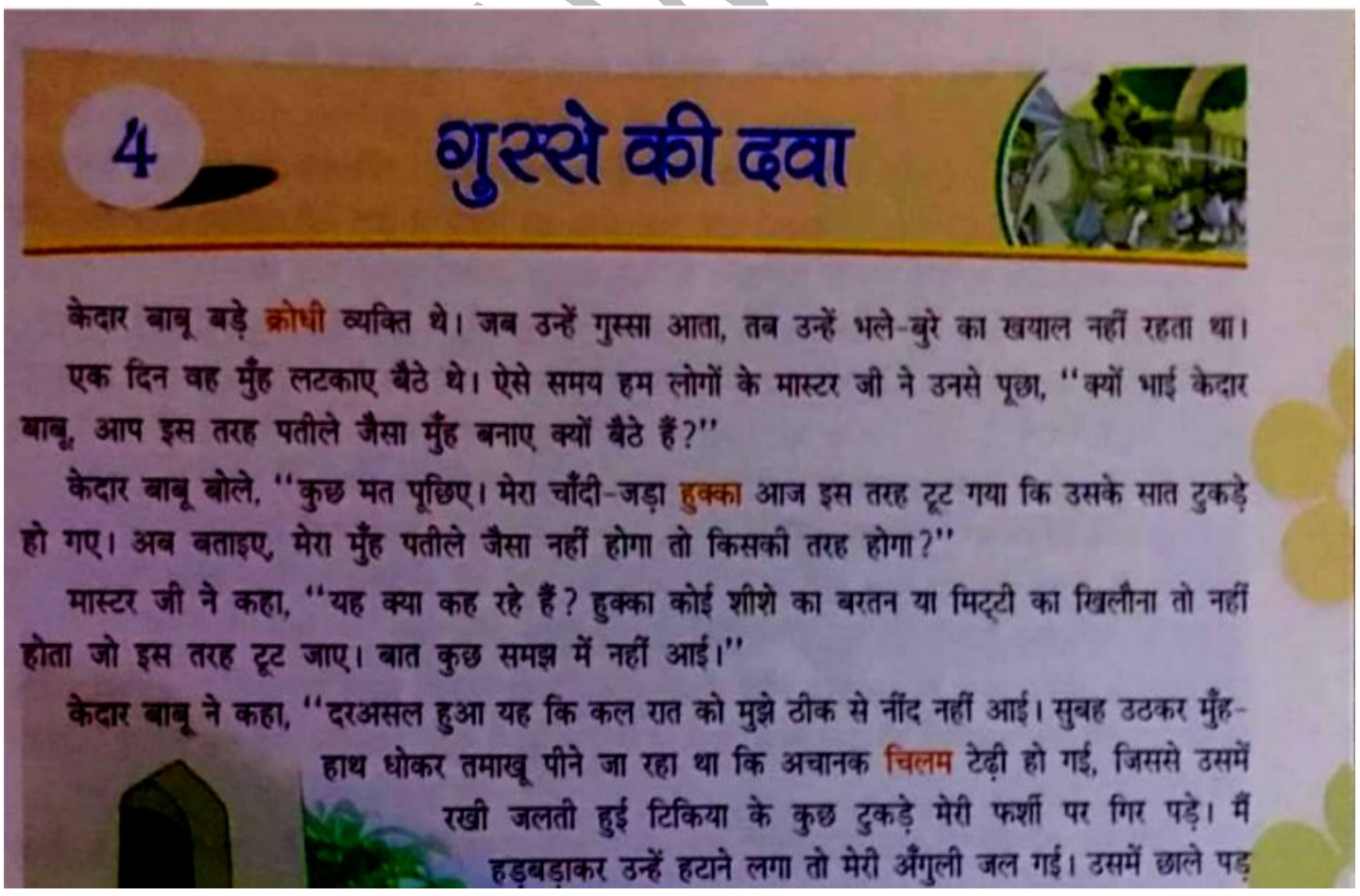

4 गुस्से की दवा

केदार बाबू बड़े क्रोधी व्यक्ति थे। जब उन्हें गुस्सा आता, तब उन्हें भले-बुरे का खयाल नहीं रहता था।

एक दिन वह मुँह लटकाए बैठे थे। ऐसे समय हम लोगों के मास्टर जी ने उनसे पूछा, "क्यों भाई केदार बाबू, आप इस तरह पतीले जैसा मुँह बनाए क्यों बैठे हैं?"

केदार बाबू बोले, "कुछ मत पूछिए। मेरा चाँदी-जड़ा हुक्का आज इस तरह टूट गया कि उसके सात टुकड़े हो गए। अब बताइए, मेरा मुँह पतीले जैसा नहीं होगा तो किसकी तरह होगा?"

मास्टर जी ने कहा, "यह क्या कह रहे हैं? हुक्का कोई शीशे का बरतन या मिट्टी का खिलौना तो नहीं होता जो इस तरह टूट जाए। बात कुछ समझ में नहीं आई।"

केदार बाबू ने कहा, "दरअसल हुआ यह कि कल रात को मुझे ठीक से नींद नहीं आई। सुबह उठकर मुँह-हाथ धोकर तमाखू पीने जा रहा था कि अचानक चिलम टेढ़ी हो गई, जिससे उसमें रखी जलती हुई टिकिया के कुछ टुकड़े मेरी फर्शी पर गिर पड़े। मैं हड़बड़ाकर उन्हें हटाने लगा तो मेरी अँगुली जल गई। उसमें छाले पड़

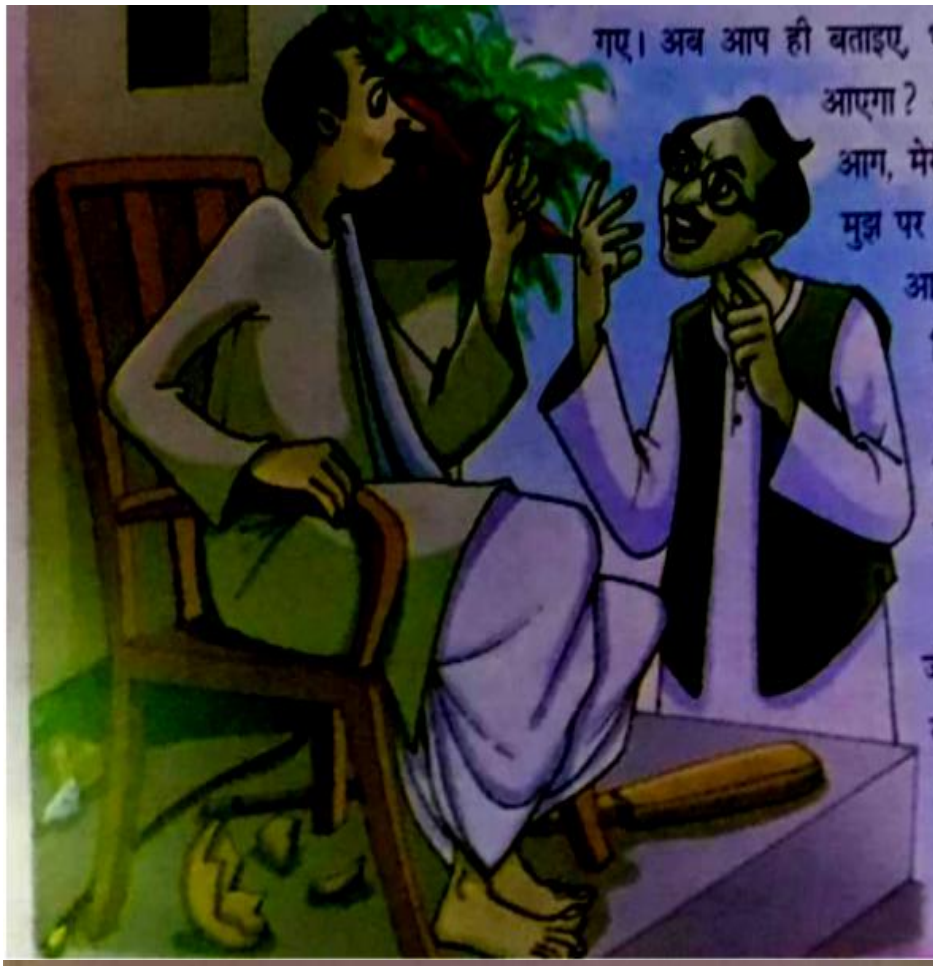

गए। अब आप ही बताइए, भला इस बात से किसे गुस्सा नहीं आएगा? अरे मेरा हुक्का, मेरी चिलम, मेरी आग, मेरी फर्शी— सब-कुछ मेरा ही, मगर मुझ पर ही जुल्म! इसी बात पर मुझे गुस्सा आ गया। बस, मैं अपना मुग्दर लेकर पिल पड़ा। ज्यादा नहीं, यही कोई आठ-दस बार मुग्दर बरसाया होगा कि हतभाग हुक्का टुकड़े-टुकड़े हो गया।"

मास्टर जी ने कहा, "खैर, आप जो भी कहें, मगर यह गुस्सा बहुत खराब चीज है। जब आपको गुस्सा आता है तो आपको किसी बात का होश नहीं रहता। अपने गुस्से को थोड़ा कम कीजिए।"

"आपने कह तो दिया कि कम कीजिए, मगर मेरा गुस्सा ऐसा-वैसा नहीं है कि मेरे कहने पर कम हो जाएगा।"

मास्टर जी ने कहा, "देखिए, मैं एक तरीका बताता हूँ। सुना है कि धीरे-धीरे एक-दो-तीन गिनने पर गुस्सा कम होने लगता है, लेकिन लगता है आपका गुस्सा दस-बारह की गिनती में शांत नहीं होने वाला। आपको जब भी गुस्सा आए, आप सौ तक गिनती एक साँस में गिन जाइए। आपका गुस्सा उतर जाएगा।"

कई दिनों के बाद एक दिन केदार बाबू स्कूल के सामने से गुजर रहे थे। उस वक्त स्कूल में खाने की छुट्टी हुई थी। बच्चे बाहर सड़क पर शोर करते हुए खेल रहे थे। अचानक एक लकड़ी की गेंद बड़ी तेजी से आकर केदार बाबू के टखने में लगी। अब तो कहना ही क्या! केदार बाबू बड़ी तेजी से गेंद की तरह ही उछले, फिर दूसरे ही क्षण अपनी लाठी तानकर खड़े हो गए। उनके हाथ में हमेशा एक छोटी-सी लाठी रहा करती थी।

उन्हें गुस्से में देखकर बच्चे भागकर कहीं छिप गए। अचानक उस वक्त केदार बाबू को मास्टर जी की बात याद आ गई। अपने गुस्से को काबू करने के लिए उन्होंने उस नुस्खे को आजमाने की बात सोची। उन्होंने वहीं सड़क पर खड़े-खड़े गिनती शुरू कर दी— एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः....

स्कूल के सामने किसी को इस तरह आँख मूँदकर गिनती गिनते देखकर स्कूल के चौकीदार को कुछ संदेह हुआ। वह चार-पाँच आदमियों को बुला लाया। उनमें से एक व्यक्ति ने पूछा, "आपको क्या तकलीफ़ है, महाशय जी?"

उसकी बात को अनसुनी करते हुए केदार बाबू अपना ध्यान गिनती में लगाने के लिए जरा ज़ोर से गिनने लगे— सोलह, सत्रह, अठारह, उन्नीस, बीस...

वहाँ खड़े लोगों ने कहा, "अरे, यह कोई पागल लग रहा है।" फिर उसी ने केदार बाबू से पूछा, "अरे ओ महाशय जी, आप आखिर इस तरह पागलों जैसे गिनती क्यों गिने जा रहे हैं? क्या आपकी अब गिनती गिनने की उम्र है, वह भी बीच सड़क पर?"

केदार बाबू को मन-ही-मन बेहद गुस्सा आया। वह और ज़ोर से गिनने लगे—तीस, इकतीस, बत्तीस, तैंतीस....

किसी और व्यक्ति ने उनसे सहानुभूति जताते हुए पूछा, "महाशय जी, क्या आपकी तबीयत अचानक खराब हो गई है? किसी डॉक्टर-वैद्य को बुलाऊँ?"

यह सुनकर केदार बाबू का गुस्सा और बढ़ गया। अपने गुस्से पर काबू पाने के लिए वह और ज़ोर से चीखने लगे— उनसठ, साठ, इकसठ, बासठ, तिरसठ...

देखते-देखते वहाँ लोगों की भीड़ जुट गई। उस रास्ते से जो भी गुजरता, वह वहीं खड़ा हो जाता। सबके लिए एक तमाशा हो गया। जितने मुँह उतनी बातें! उनके शोर से केदार बाबू के लिए गिनना मुश्किल हो गया। मगर उन्होंने गिनती अधूरी नहीं छोड़ी। वह पूरी परीक्षा कर लेना चाहते थे कि मास्टर साहब की बातों में कितनी सच्चाई है।

उधर स्कूल के सामने सड़क पर शोर सुनकर मास्टर जी भी बाहर निकल आए। उन्होंने केदार बाबू को पहचान लिया। उन्हें केदार बाबू को बताया अपना नुस्खा भी याद आ गया। केदार बाबू की गिनती भी अब खत्म होने ही वाली थी। वह दोनों हाथों से अपनी लाठी घुमाते हुए लाल-लाल आँखों से गिने जा रहे थे— छियानवे, सत्तानवे, अठानवे, निन्यानवे, सौ।

गिनती पूरी होते ही केदार बाबू बड़ी ज़ोर से चीखे, "किस बेवकूफ़ ने मुझसे कहा था कि सौ तक गिन लेने पर मेरा गुस्सा चला जाएगा? वह ज़रा सामने आए तो उसे देखूँ! .....ज़रा बुलाओ तो उस मास्टर को!"

यह कहते-कहते उन्होंने चारों तरफ़ लाठी पटकना शुरू कर दिया।

वहाँ खड़ी भीड़ अपनी जान बचाकर भागी। जिसे जो गली नज़र आई, वह उसी में घुस गया। मास्टर जी भी अपनी धोती सँभालकर स्कूल के अंदर भागे और एक कमरे में जाकर छिप गए। वह डर के मारे दिन-भर स्कूल से बाहर नहीं निकले।

उस दिन से उन्होंने केदार बाबू की गली से गुज़रना छोड़ दिया।

—सुकुमार राय

क्या समझा ? क्या जाना ?

बताइए—

1. केदार बाबू मुँह लटकाए क्यों बैठे थे?
2. मास्टर जी ने केदार बाबू को गुस्सा शांत करने का क्या नुस्खा बताया?
3. बीच सड़क पर केदार बाबू को ज़ोर-ज़ोर से गिनती गिनते देखकर लोगों ने क्या समझा?
4. मास्टर जी ने केदार बाबू की गली से गुज़रना क्यों छोड़ दिया?

सही कथन के सामने (✓) और गलत के सामने (✗) लगाइए—

1. केदार बाबू बड़े क्रोधी स्वभाव के थे। ☐
2. केदार बाबू का चाँदी-जड़ा हुक्का गिर कर टूट गया था। ☐
3. अचानक एक लकड़ी की गेंद तेज़ी से आकर केदार बाबू के टखने में लगी। ☐
4. केदार बाबू ने सड़क पर बैठकर गिनती गिननी शुरू कर दी। ☐
5. गिनती पूरी होने पर केदार बाबू का गुस्सा और बढ़ गया। ☐

मूल्यांकन -

मौखिक चर्चा , गृह कार्य , साप्ताहिक परीक्षा ।